Postal Reg. No. : XXXXXXXXX

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡد

وَلَقَدۡ نَصَرَکُمُ اللّٰہُ بِبَدۡرٍ وَّاَنۡتُمۡ اَذِلَّۃٌ

वर्ष 1 | अंक 41

साप्ताहिक क़ादियान

बदर

The Weekly BADAR Qadian HINDI

मूल्य 300 रुपए वार्षिक

संपादक शेख़ मुजाहिद अहमद

15 दिसम्बर 2016 ई   14 रबीउलअव्वल 1438 हिजरी कमरी

अख़बार-ए-अहमदिया

रूहानी ख़लीफ़ा इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज सकुशल हैं। अलहम्दोलिल्लाह। अल्लाह तआला हुज़ूर को सेहत तथा सलामती से रखे तथा प्रत्येक क्षण अपना फ़ज़ल नाज़िल करे। आमीन

अहमद बैग के दामाद के बारे भी हम बार बार लिख चुके हैं कि यह भविष्यवाणी भी शर्ती थी चेतावनी की पेशगोइयों में ख़ुदा तआला अधिकार रखता है कि उन्हें किसी की विनम्रता या अपनी ओर से स्थगित कर दे।

दुनिया की सभी क़ौमें इस बात पर सहमत हैं कि आने वाली बलाएं चाहे वह पेशगोई के रंग में प्रदर्शित की जाएं और चाहे केवल ख़ुदा तआला के इरादे में छिपी हूं वह सदका ख़ैरात और तौबा और इस्तिग़फार से टल सकती हैं तभी तो लोग मुसीबत के समय में सदका ख़ैरात दिया करते हैं अन्यथा व्यर्थ काम कौन करता है

उपदेश हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम

अहमद बैग के दामाद के बारे भी हम बार बार लिख चुके हैं कि यह भविष्यवाणी भी शर्ती थी और शर्त के शब्द जो हम ने विज्ञापन में पहले से प्रकाशित किया है यह थे اَیُّھَا الۡمَرۡاَۃُ تُوۡبِیۡ تُوۡبِیۡ فَاِنَّ الۡبَلَاءَ عَلٰی عَقِبِکِ यह इल्हामी अल्फाज़ हैं और इसमें संबोधित उस औरत की नानी है जिसके बारे में यह भविष्यवाणी है और एक बार मैंने यह इल्हाम मौलवी अब्दुल्ला साहब की औलाद में से एक व्यक्ति को होशियारपुर समय पूर्व सुनाया था शायद उनका नाम अब्दुल था या अब्दुल वाहिद था। इस इल्हाम का अनुवाद यह है। हे स्त्री तौबा कर तौबा कर क्योंकि तेरी लड़की और लड़की की लड़की पर एक बला आने वाली है और इस भविष्यवाणी में अहमद बैग और उस के दामाद की ख़बर दी गई थी इसलिए अहमद बैग समय सीमा के अंदर मर गया 1 और औरत लड़की पर बला आ गई क्योंकि वह अहमद बैग की पत्नी थी और अहमद बैग के मरने से बड़ा भय उस के संबंधियों पर छा गया यहां तक कि उनमें से कुछ ने मेरी ओर विनम्रता के साथ ख़त लिखे कि दुआ करो इस लिए ख़ुदा ने उनके इस भय और इतनी विनम्रता के कारण भविष्यवाणी के पूरा होने में देरी डाल दी और जो कुछ मौलवी मुहम्मद हुसैन और उनके साथियों के बारे में भविष्यवाणी ख़ुदा तआला के इल्हाम में लिखी गई थी उसके बारे में कोई तारीख तय नहीं थी केवल मेरी दुआ में अपने शब्द थे इल्हामी शब्द नहीं थे और सिर्फ़ मेरी दुआ से थी कि इतनी अवधि में ऐसा हो। अत: ख़ुदा तआला अपनी वह्यी का पाबन्द होता है उस पर अनिवार्य नहीं है कि जो अपनी ओर से विनती की जाए ठीक उसी को ध्यान में रखे। इसलिए भविष्यवाणी में जो अरबी में प्रकाशित हो चुकी है कोई अवधि निर्धारित नहीं है कि अमुक महीने या साल में अपमानित किया जाएगा और यह सर्वविदित है कि चेतावनी की पेशगोइयों में ख़ुदा तआला अधिकार रखता है कि उन्हें किसी की विनम्रता या अपनी ओर से स्थगित कर दे। सभी अहले सुन्नत बल्कि सभी नबी (अलैहेमुस्सलाम) इस पर सहमत हैं क्योंकि चेतावनी की भविष्यवाणी ख़ुदा तआला की तरफ से एक बला किसी के लिए निर्दिष्ट है जो सदकों ख़ैरात और तौबा और माफी से टल सकती है फर्क सिर्फ इतना है कि अगर ख़ुदा तआला इस बला को सिर्फ अपने ज्ञान में रखे और अपनी वह्यी के माध्यम से किसी अपने किसी रसूल पर प्रकट न करे तब तो वह केवल बलाए मुकद्दर कहलाती है कि ख़दा तआला के इरादे में छिपी होती है और अगर अपनी वह्यी के माध्यम से किसी अपने रसूल को इस बला का ज्ञान दे, तब वह भविष्यवाणी हो जाता है और दुनिया की सभी क़ौमें इस बात पर सहमत हैं कि आने वाली बलाएं चाहे वह पेशगोई के रंग में प्रदर्शित की जाएं और चाहे केवल ख़ुदा तआला के इरादे में छिपी हूं वह सदका ख़ैरात और तौबा और इस्तिग़फार से टल सकती हैं तभी तो लोग मुसीबत के समय में सदका ख़ैरात दिया करते हैं अन्यथा व्यर्थ काम कौन करता है और सभी नबियों की इस पर सहमति है कि सदका, ख़ैरात और तौबा और माफी से बला रद्द होती है और मेरा यह व्यक्तिगत अनुभव है कि कभी-कभी ख़ुदा तआला मेरे बारे में या मेरी औलाद के बारे या मेरे एक दोस्त के बारे में एक आने वाली बला की ख़बर देता है और जब उसके दूर करने के लिए दुआ की जाती है तो दूसरा इल्हाम होता है कि हम ने इस बला को दूर कर दिया। तो अगर इस तरह से चेतावनी की भविष्यवाणी का प्रकट होना आवश्यक है तो कई बार झूठा बन सकता हूँ और अगर हमारे विरोधियों और बुरा चाहने वालों को इस प्रकार की तक़ज़ीब का शौक है अगर चाहें तो मैं इस प्रकार की कई पेशगोईयां और फिर उन के स्थगित होने की उन्हें सूचना दे दिया करूं। हमारी इस्लामी तफसीरों में और साथ ही बाईबल में लिखा है कि एक राजा के बारे में समय के नबी ने भविष्यवाणी की थी कि उसकी उम्र पंद्रह दिन रह गई है मगर वह राजा सारी रात रोता रहा तब नबी पर फिर इल्हाम हुआ कि हम पंद्रह दिन पंद्रह साल के साथ बदल दिया है। यह क़िस्सा जैसा कि मैंने लिखा है हमारी किताबों और यहूदी और ईसाई किताबों में भी मौजूद है। अब क्या तुम यह कहोगे कि वह नबी जिसने राजा की उम्र के बारे में केवल पंद्रह दिन बतलाए थे और पंद्रह दिन के बाद मौत बतलाई थी वह अपनी भविष्यवाणी में झूठा निकला। इस ख़ुदा तआला का रहम है कि चेतावनी के पेशगोईयों में रद्द करने का सिलसिला उस की तरफ से जारी है जब तक कि जो जहन्नम में हमेशा रहने की चेतावनी कुरआन शरीफ में काफिरों के लिए है वहां भी यह आयत मौजूद है

اِلَّا مَا شَاءَ رَبُّکَ اِنَّ رَبَّکَ فَعَّالٌ لِّمَا یُرِیۡدُ

अर्थात काफ़िर हमेशा नरक में रहेंगे लेकिन यदि तेरा रब्ब चाहे क्योंकि जो कुछ वह चाहता है उसे करने में वह सक्षम है लेकिन बहिश्तियों के लिए ऐसा नहीं कहा क्योंकि वह वादा है चेतावनी नहीं है। 2

1 आश्चर्य है कि जो लोग अहमद बैग के दामाद का बार बार उल्लेख करते हैं कभी वह इसे ज़बान पर नहीं लाते कि भविष्यवाणी का एक हिस्सा पूरा हो चुका है क्योंकि अहमद बैग समय सीमा के अंदर मर गया है तो उनमें कुछ ईमानदारी होती तो ऐसा बयान करना चाहिए था कि इस भविष्यवाणी के दो भागों में से एक हिस्सा पूरा हो चुका है और दो पैरों में से एक टांग टूट गई है मगर पूर्वाग्रह भी एक अजीब बला है कि न्याय के शब्द को ज़बान पर नहीं आने देता। इसी में से।

2 कुरआन शरीफ में काफिरों और मुशरिकीन की सज़ा के लिए बार बार शाश्वत जहन्नम का उल्लेख है और बार बार कहा है خٰلِدِیۡنَ فِیۡھَاۤ اَبَدًا और फिर इसके बावजूद कुरआन शरीफ में दोज़खियों के बारे में इल्ला मा शा रब्बको भी मौजूद है और हदीस में भी है कि

یَاۡتِیۡ عَلٰی جَھَنَّمَ زَمَانٌ لَیۡسَ فِیۡھَا اَحَدٌ وَنَسِیۡمُ الصَّبَا تُحَرِّکُ اَبۡوَابَھَا

शेष पृष्ठ 8 पर

जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रैस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रौपराइटर - निगरान बदर बोर्ड क़ादियान

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम और आप की जमाअत की गरिमा को बनाए रखने की हर दम कोशिश करें, अपने अहंकारों को समाप्त करें और केवल अल्लाह के लिए काम करें।
अपने नेक व्यावहारिक नमूना से इस्लाम अहमदियत की तब्लीग़ करें, आप का नेक नमूना ही है जिसे देखकर लोग इस्लाम अहमदियत की ओर आएंगे अल्लाह तआला का एक महान पुरस्कार ख़िलाफत के रूप में आप को प्राप्त हुआ है जिसकी बरकत से आप एकता की लड़ी में पिरोए गए हो, इस नेअमत की कदर करो और इस रस्सी को मज़बूती से पकड़ो।
मेरी दुआ है कि अल्लाह तआला आपके इस जलसा को आपके लिए आध्यात्मिक फयूज़ और बरकतों का माध्यम बनाए, आप अपने अंदर नेक और पवित्र रूहानी परिवर्तन पैदा करने वाले हों।
संदेश सय्यदना हज़रत अमीरुल मोमनीन ख़लीफतुस मसीह अलख़ामिस अय्यदहुल्लाह बेनसरिहिल अज़ीज़
जलसा सालाना जापान आयोजित 3,4 मई 2016 ई.

जमाअत अहमदिया जापान का 33 वां जलसा सालाना 3,4 मई 2016 को मस्जिद बैतुल अहद जापान में आयोजित किया गया। 1981 ई से जमाअत अहमदिया जापान को जलसा सालाना आयोजन की तौफ़ीक़ मिल रही है। पहला जलसा टोक्यो में हुआ था जिसमें 5 जमाअत के दोस्त और 3 जापानी मेहमान शामिल हुए थे। बाद में विभिन्न स्थानों पर विभिन्न समुदाय केंद्र में जलसे आयोजित होते रहे। जमाअत अहमदिया जापान को इस साल यह जलसा मस्जिद "बैतुल अहद" में आयोजित करने की तौफीक मिली। इस मस्जिद का उद्घाटन हुज़ूर अनवर ने नवंबर 2015 में फरमाया था। जमाअत अहमदिया जापान की वेबसाइट, सोशल मीडिया और प्रेस विज्ञप्ति के माध्यम से जलसा सालाना की तारीखों और कार्यक्रमों के विज्ञापन दिए गए। जमाअत अहमदिया जापान के लोगों के अलावा मलेशिया, इंडोनेशिया, श्रीलंका, अमेरिका, पाकिस्तान और संयुक्त अरब अमीरात से मेहमान जलसा में शामिल हुए। जलसा सालाना के दो दिनों के दौरान धार्मिक नेताओं, विश्वविद्यालयों के प्रोफेसरों, स्कूलों के शिक्षकों और छात्रों सहित 68 जापानी मेहमान जलसा सालाना के अलग सेशनज़ में सम्मिलित हुए। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह बेनसरेहिल अज़ीज ने जलसा सालाना के लिए अपना संदेश भी भिजवाया कि अल्फज़ल इंटरनेशनल लंदन 24 जून 2016 के धन्यवाद के साथ नीचे प्रस्तुत है। (संपादक)

बिस्मिल्लाह हिर्रहमा निर्राहीम
नहमदुहू व नुसल्ली अला रसूलेहिल करीम व अला अब्देहिल मसीह मौऊद
ख़ुदा के फज़ल और रहम के साथ

जमआत अहमदिया जापान के प्रिय मित्रों!

अस्सलामो अलैकुम वरहमतुल्लाह व बरकातुहू

यह जानकर ख़ुशी हुई है कि जमाअत अहमदिया जापान को अपना 33 वां जलसा सालाना आयोजित करने की तौफीक मिल रही है। मेरी दुआ है कि अल्लाह तआला आपके इस जलसा को आप के लिए आध्यात्मिक फैज़ और बरकतों का माध्यम बनाए। आप अपने अंदर नेक और पवित्र आध्यात्मिक परिवर्तन बनाने वाले हों।

याद रखें कि सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने जमाअत की स्थापना इसलिए फरमाई है कि इसमें प्रवेश करने वाले अपने आचरण और कार्यों और तक्वा में तरक्की करें ताकि ख़ुदा तआला की सहायता और प्यार का फ़ैज़ उन्हें प्राप्त हो। आप अलैहिस्सलाम फरमाते हैं:

" ख़ुदा इस जमाअत को एक ऐसी क़ौम बनाना चाहता है जिस के नमूना से लोगों को ख़ुदा याद आए और जो तक्वा और पवित्रता के प्रथम स्थान पर कायम हों और जो वास्तव में धर्म को दुनिया में प्राथमिकता दें। " (रूहानी ख़ज़ायन भाग 20 पृष्ठ 78)

तथा फरमाया: " तुम जो मेरे साथ एक सच्चा सम्बन्ध पैदा करते हो। इससे यही उद्देश्य है कि तुम अपने आचरण में, आदतों में एक स्पष्ट परिवर्तन पैदा करो जो दूसरों के लिए मार्गदर्शन और सौभाग्य का कारण हो। " (मल्फ़ूज़ात भाग 1 पृष्ठ 151)

इसलिए जमाअत अहमदिया का स्थापना के यह विचारणीय विषय और उद्देश्य हैं। आप में से हर अहमदी को इस लक्ष्य को हर समय अपने समक्ष रखना चाहिए। अख़लाक में और आदतों में शुद्ध परिवर्तन पैदा करें। इबादत के उच्च मानकों को स्थापित करें। आपस में प्यार-मोहब्बत के परिवेश स्थापित करें। अपनी भावनाओं से पवित्र होने और नफसानियत और अपने अहंकारों को छोड़ कर ख़ुदा तआला के इरादों के अंदर चलने के लिए संघर्ष करें। अपना ऐसा नमूना पेश करें जिससे जमाअत की प्रतिष्ठा स्थापित हो। क्योंकि आप ने इस ज़माने के इमाम को माना है और अपने कार्यों के प्रभाव आप की अपनी ज़ात तक सीमित नहीं बल्कि हज़रत मसीह मौऊद बल्कि ख़ुदा तक पहुंचता है। सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फरमाते हैं:

"मैं एक बार फिर उन लोगों को संबोधित करके कहता हूँ जो मेरे साथ हैं और वह संबंध कोई साधारण संबंध नहीं बल्कि शानदार संबंध है और ऐसा संबंध है कि जिसका असर न केवल मेरी ज़ात तक बल्कि उस हस्ती तक पहुंचता है जिस ने मुझे भी उस सम्मान्नीय पूर्ण इंसान तक पहुंचाया है जो दुनिया में सत्य और धर्म की भावना लेकर आया। मैं तो यह कहता हूँ कि अगर इन बातों का असर मेरी ज़ात तक पहुंचा तो मुझे कुछ भी भय और चिंता न थी और न उनकी परवाह थी, मगर इस पर बस नहीं होती। इसका असर हमारे नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और ख़ुद ख़ुदा तआला की सम्मान्नीय ज़ात तक पहुंचता है ... इससे ज्यादा और मैं कुछ नहीं कहता कि तुम लोग एक ऐसे व्यक्ति के साथ सम्बन्ध रखते हो जो अल्लाह तआला की तरफ से मामूर है। इसलिए उसकी बातों को दिल के कानों से सुनो और उस पर अमल करने के लिए प्रत्येक श्रण तैयार हो जाओ ताकि उन में से न हो जाओ जो वैसे तो स्वीकार करने के बाद इन्कार की गन्दगी में गिर कर हमेशा का अज़ाब ख़रीद लेते हैं। " (मल्फ़ूज़ात भाग 1 पृष्ठ 104 - 105)

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम और आप की जमाअत की गरिमा को बनाए रखने की हर दम कोशिश करें, अपने अहंकारों को समाप्त करें और केवल अल्लाह के लिए काम करें। अपने नेक व्यावहारिक नमूना से इस्लाम अहमदियत की तब्लीग़ करें, आप का नेक नमूना ही है जिसे देखकर लोग इस्लाम अहमदियत की ओर आएंगे। फिर अल्लाह तआला का एक महान पुरस्कार ख़िलाफत के रूप में आप को प्राप्त हुआ है जिसकी बरकत से आप एकता की लड़ी में पिरोए गए हो, इस नेअमत की कदर करो और इस रस्सी को मज़बूती से पकड़ो। ख़िलाफत की आज्ञाकारिता का बोझ अपनी गर्दनों पर पहनो। इसी से तुम्हारा आध्यात्मिक अस्तित्व है। इसी के माध्यम से तुम्हारे आध्यात्मिक तरक्की के दरवाज़े खुलेंगे। अल्लाह तआला तुम्हारे साथ हो। अल्लाह आप को हमेशा अपनी प्रसन्नता की राहों पर चलाए। अल्लाह तआला आप को अपनी ज़िन्दगियां हज़रत मसीह मौऊद की अपेक्षाओं के अनुसार जीने की तौफीक दे। अल्लाह तआला आप का समर्थक और सहायक हो। (आमीन)

वस्सलाम ख़ाकसार
मिर्ज़ा मसरूर अहमद
ख़लीफतुल मसीह अलख़ामिस

☆ ☆ ☆

ख़ुत्बः जुमअः

आजकल की दुनिया समझती है कि माल इकट्ठा करना और उसे केवल अपने आराम और सुविधा के लिए खर्च करना ही उनके लिए ख़ुशी और शांति का कारण बन सकता है लेकिन एक मोमिन जिस को धर्म का वास्तविक एहसास और चेतना हो समझता है कि अल्लाह तआला ने दुनिया की नेअमतें और सुविधाएं मनुष्य के लिए पैदा फरमाई हैं लेकिन जीवन का मूल उद्देश्य अल्लाह तआला की ख़ुशी है तक़वा पर चलना है। अल्लाह तआला का हक अदा करना है और उस की प्रजा का हक देना है।

प्रजा की सहानुभूति में जहां ज़रूरतमंदों की ज़रूरत का ख्याल रखना है वहाँ उनके धर्म और ईमान और उन्हें ख़ुदा तआला के क़रीब लाने का ख्याल रखना भी है।

इस ज़माने में भी भौतिक जरूरतों को पूरा करने के अतिरिक्त जिसके लिए धन खर्च करना ज़रूरी है, ग़रीबों की मदद करनी ज़रूरी है। हम अहमदियों के लिए आध्यात्मिक आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए धन खर्च करना भी आवश्यक है क्योंकि हिदायत के पूर्ण प्रकाशन का काम अब हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को सौंपा गया है।

इस ज़माना में जमाअत अहमदिया ही मोमिनों की वह जमाअत है जो एक प्रणाली के अधीन इस्लाम के प्रकाशन के लिए खर्च करती है जिस में विभिन्न माध्यमों से तब्लीग़ के काम हैं और प्रजा से सहानुभूति की वजह से उनके हक़ अदा करते हुए उन पर खर्च किया जाता है और बहुत से ऐसे लोग हैं जो तकलीफ उठाकर यह खर्च करते हैं और इस विश्वास से खर्च करते हैं कि जहां यह खर्च अल्लाह तआला की नज़दीकी और ख़ुशी पाने वाला बनाएगा वहाँ यह भी तसल्ली है कि सही ढंग से खर्च होगा। इस बात की स्वीकारोक्ति तो कुछ ग़ैर लोग भी किए बिना नहीं रहते कि जमाअत की वित्तीय प्रणाली और ख़र्च बेहतरीन है।

चन्दों के लिए पवित्र माल बहुत महत्त्वपूर्ण है। चंदे भी उन से वुसूल किए जाते हैं जिनके बारे में या कम से कम यह पता हो कि यह ग़लत प्रकार से कमाया हुआ धन नहीं है और अगर है तो जमाअत का सिस्टम चंदा नहीं लेता और अगर पता लगे और फिर भी लिया जाता है तो वह अगर मुझे पता लगे तो बहरहाल या तो चंदा वापस किया जाता है या उन उहदेदारों को निलंबित किया जाता है। अतः असली बात यह है कि कुरबानी कर के देना और शुद्ध माल में से देना, तभी इस में बरकत पड़ती है।

आज मैं तहरीक जदीद के नए साल की घोषणा भी करूंगा इसलिए मैं उन कुछ कुरबानी करने वालों की कुछ घटनाएं प्रस्तुत करता हूँ जो वित्तीय कुरबानी से सम्बन्धित हैं। केवल अमीर देशों में नहीं बल्कि ग़रीब देशों और बिल्कुल नए शामिल होने वाले अहमदी जो हैं उनके भी अल्लाह तआला अहमदियत स्वीकार करने के बाद दिल कैसे फैरता है। हैरत होती है कि बावजूद तंगी के वे कुरबानी में आगे बढ़ने वाले हैं।

वित्तीय कुरबानी और उस पर अल्लाह तआला के फज़लों की असंख्य घटनाएं हैं जो मेरे पास आई हैं लेकिन मेरे लिए मुश्किल हो गया था कि उनमें से कौन से निकालों। कुछ एक मैंने प्रस्तुत किए। जैसा कि मैंने कहा लगभग हर देश में रहने वालों के साथ अल्लाह तआला का यही व्यवहार है जो अल्लाह तआला पर भरोसा करते हुए उसके लिए कुरबानी करते हैं अल्लाह तआला उन्हें बेहद सम्मानित करता है।

विभिन्न देशों के जमाअत के लोगों की माली कुरबानियों के हैरत अंगेज़ ईमान वर्धक घटनाओं का वर्णन।

समीक्षा के अनुसार यहाँ एम.टी.ए सुनने का रिवाज जितना होना चाहिए वह नहीं है या कम से कम मेरे ख़ुत्बे लाइव नहीं सुनते। जमाअत इतना अनगिनत जो खर्च करती है यह जमाअत की तरबियत के लिए है। अगर समय का अंतर भी है जो ख़ुत्बा **repeat** आता है तो उसे सुनना चाहिए।

अल्लाह तआला ने एम.टी.ए को ख़िलाफत से जमाअत का संबंध जोड़ने का एक माध्यम बनाया है। अगर घरों में आप लोग इस ओर ध्यान नहीं देंगे तो धीरे धीरे आप की औलादें पीछे हटना शुरू हो जाएंगी। अतः इससे पहले कि पछतावा शुरू हो ख़ुद को खलीफा के साथ जोड़ें और उसका सबसे अच्छा माध्यम अल्लाह तआला एम.टी.ए दिया हुआ है इसका इस्तेमाल करें। दूसरे भी कई अच्छे प्रोग्राम एम.टी.ए पर आते हैं लेकिन कम से कम ख़ुत्बा तो जरूर सुना करें। यह नहीं कि मुरब्बी साहिब ने हमें सारांश सुना दिया था इसलिए हमें पता है क्या कहा गया। सारांश सुनने में और पूरा सुनने में बड़ा अंतर है।

1934 ई में अहरार जमाअत को खत्म करने की बातें करते थे कादियान की ईंट से ईंट बजाने की बातें करते थे, तब हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहो अन्हो ने तहरीक जदीद की घोषणा की दुनिया में मिशनरी भेजने की योजना बनाई। तब्लीग़ की एक व्यापक योजना बनाई गई और आज अल्लाह तआला की कृपा से दुनिया के हर देश में जमाअत अहमदिया को जाना जाता है और 209 देशों में जमाअत की स्थापना हो चुकी है।

अल्लाह तआला की कृपा से जो रिपोर्ट आई हैं उनके अनुसार तहरीक जदीद की वित्तीय प्रणाली

पिछले साल(2015-2016ई) में सार्वभौमिक जमाअत अहमदिया एक करोड़ 9 लाख 33 हज़ार पाउंड स्टर्लिंग की कुरबानी की तौफीक मिली है अल्हम्दो लिल्लाह। विश्व व्यापी तौर से जमाअतों की स्थिति के संदर्भ में पाकिस्तान पहले नंबर पर और उस के बाद जर्मन ब्रिटेन और अमेरिका है।

विभिन्न पहलुओं से बड़े बड़े देशों की तहरीक जदीद में माली कुरबानी की समीक्षा।

अल्लाह तआला इन सब शामिल होने वालों के मालों और नफ़्सों में अपार बरकत प्रदान करे और उनकी कुरबानी को स्वीकार करे और आगे भी बढ़ चढ़कर कुरबानी की तौफ़ीक़ दे और ख़िलाफत से हमेशा उनका मज़बूत संबंध स्थापित करता रहे।

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़,

दिनांक 11 नवम्बर 2016 ई. स्थान - मस्जिद बैतुन्नूर, कैलगरी, कैनेडा।

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَہٗ لَا شَرِيكَ لَہٗ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُہٗ وَ رَسُوْلُہٗ۔ أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ اَلْحَمْدُلِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ۔اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۔ غَيْرِالْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَاالضَّآلِّيْنَ ۔

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने एक अवसर पर वित्तीय कुरबानी पर प्रकाश डालते हुए फरमाया कि

"दुनिया में इंसान माल से बहुत प्यार करता है इसी लिए ताबीरुर्या में लिखा है कि अगर कोई व्यक्ति देखे कि उसने जिगर निकालकर किसी को दिया है तो इसका अर्थ माल है।" फरमाते हैं "यही कारण है कि वास्तविक तक्वा और ईमान प्राप्त करने के लिए फरमाया لَنْ تَنَالُوا الْبِرَّ حَتّٰى تُنْفِقُوْا مِمَّا تُحِبُّوْنَ (आले इम्रान :93)वास्तविक नेकी को हरगिज़ न पाओगे जब तक कि तुम प्यारी चीज़ में से कुछ खर्च नहीं करोगे।" फरमाते हैं "क्योंकि अल्लाह की सृष्टि के साथ सहानुभूति और व्यवहार का एक बड़ा हिस्सा माल खर्च करने की ज़रूरत बतलाता है और अपनी जाति तथा अल्लाह तआला की प्रजा की सहानुभूति एक एसी चीज़ है कि जो ईमान का दूसरा भाग है जिसके बिना ईमान पूर्ण और सुदृढ़ नहीं होता।" फरमाया कि "जब तक मनुष्य त्याग न करे दूसरे को लाभ कैसे पहुंचा सकता है। अन्य को लाभ पहुंचाना और सहानुभूति के लिए त्याग आवश्यक चीज़ है और इस आयत لَنْ تَنَالُوا الْبِرَّ حَتّٰى تُنْفِقُوْا مِمَّا تُحِبُّوْنَ में इस त्याग की शिक्षा और हिदायत फरमाई गई है। इसलिए माल का अल्लाह तआला की राह में खर्च करना भी इंसान की सआदत और तक्वा की एक और कसौटी है।

(मल्फ़ूज़ात भाग 2 पृष्ठ 95-96 प्रकाशन 1985 ई यू.के)

एक अन्य उद्धरण है वह भी पढ़ता हूं। आप फरमाते हैं कि

"बात यह है कि ख़ुदा तआला की रज़ामंदी जो वास्तविक ख़ुशी का कारण है प्राप्त नहीं हो सकती जब तक अस्थायी कष्ट सहन न किए जांए।" फिर फरमाया "मुबारक हैं वे लोग जो अल्लाह तआला की ख़ुशी प्राप्त करने के लिए कष्ट की परवाह न करें क्योंकि चिरस्थायी ख़ुशी और अनन्त आराम की रोशनी इस अस्थायी कष्ट के बाद मोमिन को मिलती है।

(मल्फ़ूज़ात भाग 1 पृष्ठ 76 प्रकाशन 1985 ई यू.के)

आजकल की दुनिया समझती है कि माल इकट्ठा करना और उसे केवल अपने आराम और सुविधा के लिए खर्च करना ही उनके लिए ख़ुशी और शांति का कारण बन सकता है लेकिन एक मोमिन जिस को धर्म का वास्तविक एहसास और चेतना हो समझता है कि अल्लाह तआला ने दुनिया की नेअमतें और सुविधाएं मनुष्य के लिए पैदा फरमाई हैं लेकिन जीवन का मूल उद्देश्य अल्लाह तआला की ख़ुशी है तक़्वा पर चलना है। अल्लाह तआला का हक अदा करना है और उस की प्रजा का हक देना है। अल्लाह तआला ने इस विषय को इस आयत में उल्लेख किया है जिस को हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने स्पष्ट किया है कि वास्तविक शान्ति तो नेकियाँ करने से मिलतीं हैं, धन इकट्ठा करने से नहीं मिलती और नेकी उस समय तक अपने मानकों को प्राप्त नहीं हो सकती जब तक अल्लाह तआला और उसकी सृष्टि का हक़ अदा करने के लिए वह वस्तु खर्च न करो जिससे तुम्हें प्यार है।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फरमाते हैं कि धन ऐसी चीज़ है जिससे इंसान बहुत मुहब्बत करता है। आज अगर हम समीक्षा करें तो दुनिया के दंगे और फ़ितनों और अराजकता के कारण धन का प्रेम और वासना है। फिर दुनिया दार को तो यह भी नहीं पता कि अगर उसके पास बहुत सा धन आ गया है तो इसे खर्च कैसे करना है। इन देशों में पश्चिमी देशों में जो विकसित देश कहलाते हैं बेशक इनमें बहुत बड़े अमीर लोग भी हैं लेकिन उनके खर्च किया हैं। यहाँ खर्च करने के लिए उनके पास जो चीजें हैं casino हैं वहां जाकर ये अय्याशियों में खर्च करते हैं। जूओं पर राशि खर्च करते हैं बल्कि मुस्लिम देशों का भी यह हाल है, मुसलमानों का भी कि वे लोग भी यहां आकर ये अय्याशियां करते और खर्च करते बल्कि उनके अपने देशों में ऐसी जगहें हैं जहां खुले खर्च किए जाते हैं। कुछ समय हुआ मैंने एक पत्रिका में आइसक्रीम का एक विज्ञापन देखा था कि जो दुबई के होटल का विज्ञापन था जिस के एक कप जिस में दो या तीन स्कूप थे इसकी कीमत साढ़े आठ सौ डॉलर थी कि इसमें अमुक स्थान का केसर प्रयोग हुआ है और अमुक जगह की अमुक चीज़ इस्तेमाल हुई है और उस पर सोने की पन्नी चढ़ाई गई है। साढ़े आठ सौ डॉलर में एक ग़रीब देश के एक पूरे परिवार का बहुत उच्च रंग में गुज़ारा हो सकता है लेकिन वे एक कप आइसक्रीम खाने में लगा देते हैं। तो जिनके पास पैसा बहुत अधिक हो उन्हें पता ही नहीं कि खर्च कैसे करना है और कैसे इससे शांति प्राप्त की जा सकती है। खर्च तो बेशक ये लोग करते हैं लेकिन अपनी अय्याशियों को पूरा करने के लिए न कि अल्लाह तआला की ख़ुशी पाने के लिए और नेकियों के लिए

लेकिन अल्लाह तआला फरमाता है जिस को हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने स्पष्ट रूप से समझाया है कि वास्तविक तक्वा और ईमान प्राप्त करने के लिए अल्लाह तआला की ख़ुशी हासिल करने के लिए ईमान में बढ़ने के लिए इन व्यर्थ और अय्याशियों पर खर्च करने के स्थान पर अल्लाह तआला की सृष्टि से सहानुभूति और उत्तम व्यवहार पर खर्च करो। अगर यह नहीं तो अल्लाह तआला की ख़ुशी हासिल नहीं कर सकते। प्रजा की सहानुभूति में जहां ज़रूरतमंदों की ज़रूरत का ख्याल रखना है वहाँ उनके धर्म और ईमान और उन्हें ख़ुदा तआला के क़रीब लाने का ख्याल रखना भी है। आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम जो बेचैन रहते थे जिसका उल्लेख कुरआन में भी आया है और जिस पर अल्लाह तआला ने आप से फरमाया कि तू लोगों की हालत देखकर अपने आप को मार लेगा। वह क्या अवस्था थी जिसे देखकर आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम बेचैन होते थे। वह अवस्था इन लोगों की अल्लाह तआला से दूरी की थी, ईमान से दूरी की थी। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अपने आप को तकलीफ में इसलिए डालते थे कि ये लोग ईमान न ला कर अल्लाह तआला की पकड़ में आ जाऐंगे।

अत: इस ज़माने में भी भौतिक ज़रूरतों को पूरा करने के अतिरिक्त जिसके लिए धन खर्च करना ज़रूरी है, ग़रीबों की मदद करनी ज़रूरी है। हम अहमदियों के लिए आध्यात्मिक आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए धन खर्च करना भी आवश्यक है क्योंकि हिदायत के पूर्ण प्रकाशन का काम अब हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को सौंपा गया है। वह हिदायत जो आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम सारी मानवता के लिए लाए थे और जिसे फैलाने के लिए आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम बेचैन थे इसकी पूर्ति का समय यह है जब सब माध्यम उपलब्ध हैं जिस तरह से यह काम हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को सौंपा गया था उसी तरह अब यह काम आप के मानने वालों को सौंपा गया है। उनके ज़िम्मा है जो यह प्रतिज्ञा करते हैं कि हम धर्म को दुनिया में प्राथमिकता देंगे। अमीर लोग तो अपनी अय्याशियों पर खर्च करते हैं। इतनी अधिकता से है उनके पास धन है कि उन्हें पता नहीं चलता कि वे खर्च कैसे करें। सारी ज़रूरतों को पूरा करने के बाद उन्हें समझ नहीं आती कि इस धन का क्या करना है क्योंकि उन का धर्म और मानवीय सहानुभूति का हिस्सा तो प्राय खाली होता है तो अय्याशियों और आवारगी के अतिरिक्त कुछ नज़र नहीं आता लेकिन मोमिन वह है जिस को अल्लाह तआला फरमाता है कि अधिक माल ही नहीं बल्कि वास्तविक नेकी पाने के लिए और इसके नतीजे में अल्लाह तआला की ख़ुशी प्राप्त करने के लिए अपने आप को संकट में डाल कर इस माल से खर्च करो जिससे तुम्हें प्यार है। बेशक कुछ धनवान भी कुछ चीरेटीज़ में खर्च दान भी कर देते हैं लेकिन उन के खर्च उनकी आय से बहुत कम होते हैं और फिर उनमें कोई नियमित नहीं होता। इसलिए नियमित और अच्छे उद्देश्यों को पूरा करने के लिए नेकियाँ कमाने के लिए केवल मोमिन खर्च करता है और इस ज़माना में जमाअत अहमदिया ही मोमिनों की वह जमाअत है जो एक प्रणाली के अधीन इस्लाम के प्रकाशन के लिए खर्च करती है जिस में विभिन्न माध्यमों से तब्लीग़ के काम हैं और प्रजा से सहानुभूति की वजह से उनके हक़ अदा करते हुए उन पर खर्च किया जाता है और बहुत से ऐसे लोग हैं जो तकलीफ उठाकर यह खर्च करते हैं और इस विश्वास से खर्च करते हैं कि जहां यह खर्च अल्लाह तआला की नज़दीकी और ख़ुशी पाने वाला बनाएगा वहाँ यह भी तसल्ली है कि सही ढंग से खर्च होगा। इस बात की स्वीकारोक्ति तो कुछ ग़ैर लोग भी किए बिना नहीं रहते कि जमाअत की वित्तीय प्रणाली और ख़र्च बेहतरीन है।

हमारे कबाबीर के मुबल्लिग़ ने एक घटना लिखी कि यरूशलेम विश्वविद्यालय के दो रिटायर प्रोफेसर अपने दो बाहरी मेहमान दोस्तों के साथ हमारे मिशन कबाबीर में आए। उनके साथ जमाअत के बारे में बातचीत करने का मौका मिला। जमाअत की प्रणाली का बताया गया। इन मेहमानों में से एक ऑस्ट्रिया से संबंधित प्रोफेसर थे वह अंत में कहने लगे कि मुझे जमाअत अहमदिया की जो सबसे अच्छी बात लगी है वह यह है कि आपकी जमाअत की वित्तीय प्रणाली बहुत पवित्र और साफ है। कहने लगे कि दुनिया में केवल शुद्ध माल से क्रांति लेकर आना शायद आप लोगों के भाग्य में ही लिखा हुआ है और इसके लिए आपको मुबारक हो।

और चन्दों के लिए पवित्र माल बहुत महत्त्वपूर्ण है अल्लाह तआला ने भी फरमाया है कि अपने इस माल से दो जो शुद्ध माल हो जो वैध तरीके से कमाया हुआ माल हो। धोखा देकर कमाया हुआ माल न हो, कर बचाकर कमाया हुआ माल न हो या किसी भी तरह से ग़लत रंग में कमाया हुआ माल न हो। तो चंदे भी उन से प्राप्त किए जाते हैं जिनके बारे में कम से कम यह पता हो कि यह ग़लत प्रकार से कमाया हुआ धन नहीं है और अगर है तो जमाअत का सिस्टम चंदा नहीं लेता और अगर फिर भी लिया जाता है तो वह अगर मुझे पता लगे तो बहरहाल या तो चंदा वापस किया जाता है या उन उहदेदारों को निलंबित किया जाता है। अत: असली बात यह है कि कुरबानी कर के देना और शुद्ध माल में से देना, तभी इस में बरकत

पड़ती है और जब दूसरों को यह बताया जाए तो वे भी स्वीकार करते हैं जैसा कि प्रोफेसर ने कहा। फिर यह बात इस दुनिया दार को भी नज़र आ गई कि इंकलाब लाने वाले यही लोग हैं।

अत: जब तक हमारी निय्यतें नेक रहेंगी। जब तक हम पवित्र माल कमाने की कोशिश करते रहेंगे और उसे ख़ुदा तआला के रास्ते में खर्च करेंगे वास्तव में तब तक हम इंकलाब लाने का माध्यम बन सकेंगे और यह इंक़लाब हमारे भाग्य से जुड़ा है क्योंकि अल्लाह तआला का हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम से यह वादा है। कोई सांसारिक इंकलाब हम ने नहीं लाना बल्कि आध्यात्मिक इंकलाब लाना है। आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के संदेश को दुनिया में पहुंचाना है। तौहीद की स्थापना करनी है और सृष्टि के हक़ अदा करने हैं और यह कोई मानवीय बातें नहीं हैं बल्कि अल्लाह तआला ने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम से शुद्ध और हार्दिक मुहब्बत करने वालों के गिरोह को बढ़ाने का वादा किया गया है, जो यह काम अंजाम देंगे, जो आप काम के पूरा होने के लिए हर कुर्बानी करने वाले होंगे।

अत: हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम अपनी जमाअत की वफादारी का ज़िक्र करते हुए फरमाते हैं कि

"आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सहाबा रज़ियल्लाहो अन्हुम ने वह ईमानदारी और वफा का नमूना दिखाया जिसकी मिसाल दुनिया के इतिहास में नहीं मिल सकती। उन्होंने आपके लिए हर प्रकार का दु:ख उठाना आसान समझा। यहां तक कि प्रिय मातृभूमि को छोड़ दिया। अपनी संपत्ति व सामान और मित्रों से अलग हो गए।" फरमाते हैं "इसी तरह देखता हूँ कि अल्लाह तआला ने मेरी जमाअत को भी इस के सामर्थ्य के अनुसार" अर्थात जितना जितना जमाअत का ईमान है और जो उनकी हालत है। सहाबा का स्थान तो बहुत ऊँचा था लेकिन इस ज़माना में उन सहाबा का स्थान भी ऊंचा था जो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के हाथ पर बैअत करने वाले थे। फरमाते हैं "इसी सामर्थ्य और सम्मान के अनुसार एक जोश दिया है और वह सच्चाई और ईमानदारी का नमूना दिखाते हैं।"

(मल्फूज़ात भाग 1 पृष्ठ 336-337 प्रकाशन 1985 ई संस्करण यू.के)

फिर जमाअत की वित्तीय कुरबानी का ज़िक्र करते हुए आप फरमाते हैं कि उन लोगों ने "मेरे धार्मिक उद्देश्य के लिए हमेशा दिल खोलकर चंदे दिए हैं।" फरमाया कि "हर व्यक्ति अपने सामर्थ्य और शक्ति के अनुसार भाग लेता है। अल्लाह तआला बेहतर जानता है कि वह किस ईमानदारी और श्रद्धा से इन चन्दों में सम्मिलित होते हैं।" फरमाया कि "मैं यह जानता हूं कि हमारी जमाअत ने वह ईमानदारी व सच्चाई दिखाई है जो सहाबा तंगी के दिनों में दिखाते थे।"(मल्फूज़ात भाग 1 पृष्ठ 338 प्रकाशन 1985 ई संस्करण यू.के) अर्थात तंगी के अवसर पर दिखाते थे। एक अवसर पर आप ने जमाअत के लोगों की कुरबानी की गुणवत्ता को देखकर इस आश्चर्य को भी व्यक्त फरमाया था कि कैसे वे इतनी कुर्बानी देते हैं।

अत: हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने अपने मानने वालों में वह इंकलाब पैदा किया जो सांसारिक इच्छाओं को पीछे डाल कर और धर्म को प्राथमिकता देने वाले थे लेकिन क्या जो कुरबानी की भावना आप ने अपने मानने वालों में पैदा की थी, जो सीधा आप के हाथ पर बैअत करने वाले थे वह समाप्त हो गए। तब तक थी और अगर ऐसा है तो जमाअत के कदम तरक्की करने वाले कभी नहीं हो सकते और न कभी तरक्की की तरफ उठते। अल्लाह तआला ने आपसे यह भी वादा किया था कि तुझे धरती के किनारों तक सम्मान के साथ प्रतिष्ठा दूंगा और उसके लिए ईमानदार और कुरबानी और त्याग करने वाली जमाअत की भी ज़रूरत थी। इसी तरह आप ने अल्लाह तआला से सूचना पाकर यह ख़ुश ख़बरी भी दी थी कि आप के बाद यह ख़िलाफत प्रणाली जारी होगी जो आप के काम को पूरा करेगी और जिसके साथ जुड़ कर मुख़लेसीन इस काम को अंजाम देंगे। अत: आज हम देखते हैं कि अल्लाह तआला अपने वादे कैसे पूरे फरमाता चला जा रहा है। मुख़लेसीन की एक जमाअत है और ख़िलाफत के साथ जुड़कर जान, माल और समय की कुर्बानी दे रही है।

क्योंकि आज मैं तहरीक के जदीद नए साल की घोषणा भी करूंगा इसलिए मैं उन कुछ कुरबानी करने वालों की कुछ घटनाएं प्रस्तुत करता हूँ जो वित्तीय कुरबानी से सम्बन्धित हैं। केवल अमीर देशों में नहीं बल्कि ग़रीब देशों और बिल्कुल नए शामिल होने वाले अहमदी जो हैं उनके दिल भी अल्लाह तआला अहमदियत स्वीकार करने के बाद कैसे फैरता है। हैरत होती है कि बावजूद तंगी के वे कुरबानियों में आगे बढ़ने वाले हैं।

अत: मुबल्लिग़ इंचार्ज साहिब गिनी कनाकरी लिखते हैं कि यहाँ एक जमाअत सोमबोयावी (Soumbouyady) है इस मस्जिद के इमाम अपनी मस्जिद सहित इस साल जमाअत में शामिल हुए। जब उन्हें जमाअत की वित्तीय प्रणाली और तहरीक जदीद का महत्त्व आदि के बारे में बताया गया तो कहने लगे कि मैंने ख़ुद भी चंदा और ज़कात पर बहुत अधिक लेक्चर दिए हैं लेकिन इतनी मज़बूत और व्यापक वित्तीय प्रणाली मैंने कहीं और नहीं देखी और न कभी ऐसे सिस्टम के बारे में सुना था। इसलिए उन्होंने ने उसी समय चंदा अदा किया और कहा कि मैं आपसे वादा करता हूं कि भविष्य में हर महीने हमारी सारी जमाअत चंदा अदा करेगी। ये वे लोग हैं जो गरीब क्षेत्र के हैं और ग़रीबी का जो मानक है यूरोप में भी अत्यधिक या पश्चिम में भी इस के भी बेहद निचले स्तर के ग़रीब हैं लेकिन कुरबानी में यह सबसे उच्च स्तर पर पहुंचने वाले लोग हैं।

फिर यह केवल एक देश का किस्सा नहीं बल्कि यह हवा दुनिया के कई देशों में चल रही है। पहले गिनी कनाकरी का उल्लेख हुआ था तो अब आइवरी कोस्ट के मुबल्लिग़ साहिब भी लिखते हैं कि हम तब्लीग़ के लिए एक गांव कोपनगे (Kopingue) में गए और उन्हें जमाअत का पैग़ाम पहुंचाया। सभी पुरुषों और महिलाओं ने बहुत ध्यान से हमारी तब्लीग़ सुनी। एक दोस्त कहने लगे कि पहले भी यहां काफी लोग तब्लीग़ के लिए आ चुके हैं लेकिन इस तरह का सुंदर संदेश हम ने पहले कभी नहीं सुना तो उसके बाद तीन सौ के क़रीब लोग उसी समय जमाअत में शामिल हो गए। फिर उन्हें जमाअत की वित्तीय प्रणाली और तहरीक जदीद के बारे में बताया गया और बातों बातों में यह भी उल्लेख हो गया कि तहरीक जदीद के साल का आज यह आख़री दिन है। इस पर गांव के मुख्य इमाम ने ग्रामीणों से कहा कि हम वास्तव में आज अहमदी हुए हैं और अहमदियत में आज शामिल हुए लेकिन हर मामले में इस मुबारक तहरीक में शामिल होंगे। तो गांव वालों ने तुरंत दस हज़ार फ्रैंक जमा करके तहरीक जदीद में अदा किए।

फिर कुरबानी की एक घटना अफ्रीका के एक और देश तंज़ानिया के मवानज़ह क्षेत्र की है। वहां के एक दोस्त का तहरीक जदीद का वादा दो लाख शिलिंग का था जिसमें उन्होंने एक लाख शिलिंग अदा कर दिया था जबकि एक लाख बकाया था। वह कहते हैं कि अक्टूबर में अमीर साहिब ने उन्हें ध्यान दिलाया कि अब आप के ज़िम्मे एक लाख शिलिंग बकाया है और तहरीक जदीद का वर्ष समाप्त हो रहा है इस पर उन्होंने कहा कि इस समय सफर पर हूं लेकिन मैं कोई प्रबंध करता हूँ अत: उन्होंने एक बस ड्राइवर के हाथ यह राशि भिजवा दी और उसे यह कहा कि यह मेरा चंदा है जिस का अदा करना बहुत महत्त्वपूर्ण है और वहां पहुंचते ही यह सारी रकम मुअल्लिम को दे देना। उसका नाम बताया, पता दिया। इसलिए वह बस ड्राइवर जैसे ही बस स्टैंड पर पहुंचा उसने मुअल्लिम साहिब को फोन करके कहा कि आपकी अमानत मेरे पास है आ कर ले जाएं जब मुअल्लिम चंदा लेने गए तो ड्राइवर ने मुअल्लिम से कहा कि वह भी अहमदी होना चाहता है। इस बस ड्राइवर के बीवी बच्चे पहले अहमदी हो चुके थे लेकिन वह ख़ुद नहीं हो रहा था कि तसल्ली नहीं है। कहने लगा मुझे इस बात ने बहुत प्रभावित किया है कि इस भौतिक युग में जहां इंसान माल से बहुत प्यार करता है और हम तो ग़रीब क्षेत्र के लोग हैं, कैसे अल्लाह तआला ने ऐसे लोग पैदा किए हैं जो अल्लाह तआला के रास्ते में माल देकर वास्तविक ख़ुशियां और शांति पाते हैं। इस तरह अहमदी दोस्त जिन्होंने बस ड्राइवर के माध्यम से अपना चंदा भिजवाया था उनका यह चंदा भिजवाना इस ग़ैर अहमदी को भी अहमदियत में शामिल करने का कारण बन गया। अत: यह है वह नेक निय्यत से दिए हुए चंदे जिसके परिणाम तुरंत निकलते हैं। वित्तीय कुरबानी जो प्रिय माल में दी गई है वह एक नेक रूह के सुधार का कारण बन गई। तो इस तरह अल्लाह तआला फल देने के विभिन्न साधनों का उपयोग करता है।

इसी तरह सेनेगाल के अमीर साहिब लिखते हैं कि हमारी जमाअत के एक सदस्य उमर साहिब के पिता जो कि ग़ैर अहमदी थे गिनी कनाकरी से अत्यधिक बीमारी की हालत में आए। प्रारंभिक दवाओं और जाँच के बाद डॉक्टरों ने प्रोस्टेट का ऑपरेशन प्रस्तावित किया लेकिन उमर दयालु साहिब के पास इतनी रकम नहीं थी कि वह अपने पिता का ऑपरेशन करवा सकते हैं और इतना बड़ा कर्ज़ा लेना भी उनके लिए मुश्किल नज़र आ रहा था। बेहद परेशान थे। कहते हैं कि अक्टूबर का पहला सप्ताह शुरू हुआ तो ख़ुत्बा जुम्अ: में जब मैंने तहरीक जदीद के बारे में ध्यान दिलाया तो अगले दिन उमर साहिब मिशन हाउस आए और कहने लगे मेरी तहरीक जदीद के चंदे की रसीद काट दें। अमीर साहिब कहते हैं कि मुझे उनकी स्थिति का पता था मैंने उन्हें कहा कि आप के पहले हालात ऐसे हैं पिता बीमार हैं आप कुरबानी

कैसे करेंगे। उन्होंने कहा कल जो आप ने ख़ुत्बा दिया था कि अल्लाह तआला से यह सौदा है तो अल्लाह तआला से सौदा करने आया हूँ इसलिए आप मेरी रसीद काटें। यह कहते हैं कि दो दिन के बाद उनके पिता की अयादत करने के लिए उनके घर गया तो उनके पिता बाहर कुर्सी पर बैठे हुए थे और उमर साहिब कुछ देर के बाद आए और कहने लगे कि आज मेरा व्यापार सफल हो गया कि अल्लाह तआला की कृपा से पिता बिल्कुल ठीक हैं और दर्द आदि कुछ नहीं है। कुछ दिन के बाद डॉक्टर ने भी फिर चेकअप किया तो उसने कहा कि ऑपरेशन की भी ज़रूरत नहीं है इसलिए इस घटना के बाद उनके पिता ने भी बैअत कर ली। तो यह कई बार नकद सौदे होते हैं जो अल्लाह तआला करता है पिछले सप्ताह मैंने मस्जिद के उद्घाटन पर भी यहां के एक व्यक्ति का उल्लेख किया था। कैसे उस ने मस्जिद की सेवा को प्राथमिकता दी और अल्लाह तआला ने असाधारण रूप से उसके लिए बहुत बड़ी रकम का प्रबंध कर दिया। एक दुनियादार तो शायद इसे संयोग समझे लेकिन ख़ुदा में विश्वास रखने वाला इस बात पर विश्वास रखता है कि वास्तव में अल्लाह तआला की कृपा है जो हुई।

इसी तरह कांगो कनसाशा की एक जमाअत हैVunda Mulunda के एक अहमदी दोस्त अय्यूबKukondolo साहिब कहतें हैं कि मैं पहले जमाअत के कामों में भाग नहीं लेता था। मेरा बेटा हमेशा बीमार रहता था और उसके चिकित्सा उपचार पर बहुत खर्च होता था। फिर मुझे कहते हैं मुझे स्थानीय मज्लिस आमला (कार्यकारिणी) में सैक्रेटरी माल की ज़िम्मेदारी दी गई। इस पर मैंने सोचा कि जब मुझे सैक्रेटरी माल बनाया गया है तो मेरी वित्तीय कुरबानी जमाअत के लिए नमूना होनी चाहिए। अब एक दूर दराज़ रहने वाले एक देश में छोटी सी जगह में एक ग़रीब आदमी को यह विचार आता है कि जब मुझे सैक्रेटरी माल बनाया गया तो मेरी कुरबानी की गुणवत्ता भी दूसरों से बेहतर होनी चाहिए। कहते हैं मैंने नियमित चंदा देना शुरू कर दिया और चंदे की बरकत से मेरे हालात में भी परिवर्तन पैदा होना शुरू हो गया। जीवन शांत और समृद्ध होने लगा। मेरा बेटा भी अल्लाह तआला की कृपा से बीमारियों से सुरक्षित है। मैं समझता हूं कि यह सब जमाअत की सेवा और वित्तीय कुरबानी का परिणाम है।

पेट काटकर कुरबानी करने का मुहावरा इस्तेमाल होता है। सुना तो था लेकिन इस की वास्तविकता तक मनुष्य नहीं पहुंच सकता जब तक कुछ ऐसी घटनाएं सामने न आएं। गरीबों की कुरबानी की गुणवत्ता देखकर यह बातें सामने आती हैं।

गैम्बिया की Yeeda गांव की एक महिला ने अहमदियत स्वीकार की। तहरीक जदीद के बारे में जब उन्हें बताया गया तो महिला ने जवाब दिया कि मेरे घर में केवल चावल खरीदने के लिए सौ डलास पड़े हुए हैं। चावल बिल्कुल ख़त्म हो चुके हैं। महिला ने यह भी बताया कि उसका इकलौता बेटा जो अपने परिवार को सपोर्ट करता था वह दो साल से ग़ायब है और लोग कहते हैं कि वह मर चुका होगा अब दो साल से ग़ायब है उसका कोई अता-पता नहीं लेकिन साथ ही इस महिला ने कहा कि ठीक है मैं गुज़ारा कर लूंगी, खाने के लिए उधार कहीं ले लूँगी। यह राशि जो है यह तहरीक जदीद चंदे में दे दें। अल्लाह तआला ख़ुद ही मेरी कोई व्यवस्था कर देगा। इस घटना के तीन दिन बाद ही उनका वह लड़का जो दो साल से ग़ायब था वह वापस आ गया और अपने साथ चावल की दस बोरियों भी लेकर आया और बड़ी राशि लेकर आया। तो इस लड़के ने बताया कि जब वह ग़ायब था वह तो इस अवधि में वह निर्माण का काम सीखता रहा और अब इसे शहर में रहते हुए कई बड़े और अच्छे ठेके मिलने लगे हैं। यह महिला ख़ुद कहने लगीं कि मेरी इस समय वित्तीय कुरबानी की बरकत है और मैं हमेशा भविष्य में हिस्सा लूँगी।

क्या यह इंकलाब नहीं जो दूर बैठे लोगों में अल्लाह तआला ने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को मानने के कारण पैदा कर दिया है? यकीनन है। इस महिला की ईमानी स्थिति देखें किस स्तर पर पहुंची हुई है कि उसने अपनी भूख की कोई परवाह नहीं की और फिर अल्लाह तआला ने जो इससे व्यवहार किया वह भी आश्चर्यजनक है।

माली से मुबल्लिग़ सिलसिला लिखते हैं कि एक अहमदी महिला जिनकी उम्र अस्सी साल के करीब है बड़ा नियमित चंदा देती हैं। एक दिन घर से पैदल चलकर जो एक किलोमीटर की दूरी पर था मिशन हाउस आईं और इन का गर्मी में बुरा हाल था। इन देशों में गर्मी भी बड़ी होती है। उन्होंने कहा कि आप मुझे बता देतीं मैं आ कर चंदा ले लेता। कहने लगीं कि मुझे वित्तीय कुरबानी का जब से पता लगा है इस का क्या महत्त्व है तो मैं नहीं चाहती कि उसका सवाब बर्बाद करूं। एक तो पैदल चल कर आईं क्योंकि रिक्शा पर जो पैसे लगने थे वह भी चंदे में दे दूं। तो ये हैं लोगों के स्तर दूर दराज क्षेत्रों में बैठे हुए हैं। अल्लाह तआला जिस तरह अहमदियों के ईमानों को व्यक्तिगत अनुभवों में से गुज़ार कर शक्ति देता है वह भी हर घटना से ज़ाहिर होती है।

बेनिन के मुअल्लिम ज़कारिया साहिब एक घटना का उल्लेख करते हैं कि एक जमाअत सुने पोता (Sinwe Kpota) के सदर की नौकरी चली गई जिसकी वजह से वह बड़े परेशान थे। उन्हीं दिनों उन्हें तहरीक जदीद की याद दहानी करवाई गई। कुछ दिन बाद उन्होंने बताया कि जब मुझे चंदे की याद दहानी करवाई गई। सख्त चिंता हुई। मैंने ख़ुदा तआला से दुआ की कि कोई माध्यम पैदा कर दे कि मैं अपना तहरीक जदीद का चंदा अदा कर दूँ और कहते हैं मैंने रात भी बहुत व्याकुलता से गुज़ारी। सुबह फजर की नमाज़ समाप्त हुई तो काम की तलाश में पास के एक गांव में चला गया वहाँ मुझे कोई काम नहीं मिला लेकिन एक आदमी अपने जानवर बेचने के लिए कहीं जा रहा था मैंने उसकी कुछ मदद कर दी उस व्यक्ति ने मुझे पाँच सौ फ्रैंक दिए। कहते हैं मैंने इन पैसों से दो सौ फ्रैंक से कुछ खाने का सामान लिया। सौ फ्रैंक अपने बच्चे को दिए स्कूल जाता है और दो सौ फ्रैंक चंदा अदा कर दिए। वह कहते हैं कि अल्लाह तआला ने इस तुच्छ सी भेंट के बदले ऐसी कृपा की कि चंदा देने के ठीक चार दिन बाद उन्हें काम मिल गया और इतनी जल्दी और ऐसी उपयुक्त नौकरी मिल जाना केवल संयोग नहीं है बल्कि ख़ुदा तआला की कृपा है। फिर अब यह अफ्रीका की घटनाएं हैं।

भारत से भी इंस्पेक्टर तहरीक जदीद लिखते हैं। आंध्रा प्रदेश और तेलंगाना के इंस्पेक्टर शहाबुद्दीन साहिब कहते हैं कि हैदराबाद के एक दोस्त एक ग़रीब परिवार से सम्बन्ध रखते हैं। उन्होंने अपने व्यापार में बीस हज़ार रुपए से काम शुरू किया। एक छोटी सी दुकान चलाते हैं। नमाज़ के समय जब होते हैं तो दुकान बंद कर देते हैं। यह है वास्तविक मोमिन की शान कि फिर व्यापार बंद करे और कहते हैं कि साल में एक महीने की पूरी आय तहरीक जदीद में अदा करते हैं। इस साल भी उन्होंने साठ हज़ार रुपए तहरीक जदीद में दिए। किराए के मकान में रहते हैं। कहते हैं एक दिन मैंने उन्हें कहा कि आप अपना निजी घर खरीद लें। उस पर कहने लगे कि जैसा चल रहा है चलने दें। दुनिया वैसे भी इस तरह हलाकत की ओर बढ़ रही है कि माल इकट्ठा करने की ज़रूरत है क्यों न अल्लाह तआला की राह में खर्च करता रहूं।

इसी तरह पाकिस्तान से नायब वकील माल लिखते हैं कि स्यालकोट के एक ख़ादिम के साथ मुलाकात हुई। पंद्रह हज़ार रुपया उनका वादा था जो मैंने उन्हें कहा कि पंद्रह हज़ार से बढ़ाकर एक लाख कर दें तो उन्होंने एक लाख रुपए कर दिया। उन्होंने जूते निर्यात करने का कारोबार शुरू किया और कहते हैं शुरू में पांच हज़ार चंदा देते थे फिर दस हज़ार दिया फिर आगे बढ़ाया पंद्रह हज़ार से बढ़ाकर लाख किया। अब वे कहते हैं चन्दों की बरकत से जिस कारख़ाने को उन्होंने किराए पर लिया हुआ था वह कारखाना उन्होंने ख़रीद लिया और कारोबार भी अच्छा हो गया।

इसी तरह इंडोनेशिया से हमारे मुबल्लिग़ लिखते हैं कि वहां के एक व्यक्ति ने कहा कि अगर मेरे पास बाइक हो तो मुझे अपने बेटे के साथ जुम्अ: पढ़ने के लिए आना आसान हो जाएगा। तो हमारे मुबल्लिग़ ने उन्हें कहा कि दुआ करें और चन्दों में नियमित हों। इसके बाद उन्होंने अपना और परिवार का चंदा तहरीक जदीद देना शुरू कर दिया। कहते हैं थोड़े समय में अल्लाह तआला ने फज़ल किया और मोटर साइकिल खरीदने की तौफीक मिल गई। अब इस घर में एक के स्थान पर तीन मोटर साइकिल हैं। वसीयत उन्होंने कर ली है आय उनकी बढ़ गई है।

यहाँ कनाडा में भी कुछ लोग ऐसे हैं जिन के बारे में अमीर साहिब लिखते हैं कि हज़ार डॉलर चंदा था बढ़ाकर पांच हज़ार का वादा किया और अल्लाह तआला की कृपा से अदा भी कर दिया। इसलिए कि शुरू में ही अदा कर दिया कि अल्लाह तआला के फज़्लों को समेटा जाए और मस्जिद के लिए भी उन्होंने बीस हज़ार डॉलर अदा किया। इसी तरह कुछ यहाँ भी ईमान वर्धक घटनाएं हैं एक महिला कहती हैं मेरा वादा एक हज़ार कनाडा डॉलर था। पैसे नहीं थे शाम को पति का फोन आया कि अमुक व्यक्ति ने पैसे दिए हैं चेक दिया है तो मैंने कहा कि एक हज़ार डॉलर का चेक होगा। उसने कहा तुम्हें कैसे पता है उसने कहा क्योंकि मुझे चिंता थी कि

मैंने तहरीक जदीद का चंदा देना था और एक हज़ार डॉलर का अदा करना था और मुझे लगता था कि अल्लाह तआला ने यह व्यवस्था की है तो इतनी ही राशि होगी।

इसी तरह यूरोप के देशों की घटनाएं हैं। यहाँ नई जमाअत की स्थापना हो रही हैं। क्रोएशिया के मुबल्लिग़ लिखते हैं कि ग़रीबी के कारण नौकरियों के अवसर बहुत कम हैं। एक बहुत बड़ी संख्या ऐसी है जिसके पास कोई आय का साधन नहीं है। वे या तो अपने रिश्तेदारों से अगर कोई राशि मिल जाए या फिर कोई ऐसा काम मिल जाए जो एक या दो दिन का है इससे आमतौर पर गुज़ारा करते हैं। एक बड़े अहमदी दोस्त हैं जिन्हें जमाअत का काम करने का बहुत शौक है और लगभग अपना सारा समय जमाअत के कामों में खर्च करते हैं लेकिन जब जमाअत का काम नहीं कर रहे होते तो उनकी कोशिश रहती है कोई न कोई काम जो जमाअत को फायदा दे वह करते रहें। लगभग एक साल से वह ख़ाली डिब्बे जमा करते थे ताकि उसे रीसाइक्लिंग वालों को देने से कुछ राशि मिल जाए। साल भर वह डिब्बे इकट्ठा किए और रीसाइक्लिंग वालों को दिए। सारे साल में इस काम के लिए उन्हें सिर्फ तीस डॉलर मिले और उन्हें लेकर वह सीधा मिशन हाउस आए और इसमें से दस डॉलर चंदे में अदा कर दिए कि मेरा तहरीक जदीद के चंदे का वादा था वह मैंने पूरा किया है वह कहते हैं कि इस हिसाब से पूरे साल में जो भी मेहनत उन्होंने की इस का 1/3 जमाअत को दे दिया।

जर्मनी के सैक्रेटरी तहरीक जदीद ने लिखा कि एक महिला हैं जिन्होंने अपना नाम नहीं ज़ाहिर किया। तहरीक जदीद दफतर में आईं और अपना सारा गहना तहरीक जदीद में पेश कर दिया और गहने इतने अधिक थे कि यह सारा मेज ज़ेवर से भर गया। सोने के हार, अंगूठियाँ, चूड़ियाँ, पर्याप्त संख्या में चीज़े थीं लेकिन उन्होंने कहा मेरा नाम नहीं ज़ाहिर करना ताकि मेरी कुरबानी केवल ख़ुदा तआला के लिए हो। आभूषण महिला की कमज़ोरी है लेकिन अहमदी औरतें हैं जो यह कुरबानी करती हैं।

यहाँ भी मुझे एक अहमदी औरत मिली कि मैंने अपने सब गहने चंदे में, मस्जिद फंड में या किसी चीज़ में दिया था लेकिन मेरे ससुराल वालों को यह बात बड़ी नापसंद आई और बड़ा मुझे कह रहे हैं क्यों आप ने दिया और विभिन्न प्रकार के ताने हैं। अल्लाह तआला तो अपने लिए कुरबानी करने वालों को सम्मानित करता है और इन महिला को भी जिन्होंने कुरबानी अल्लाह तआला के लिए की है इंशा अल्लाह, अल्लाह तआला देगा और बहुत देगा लेकिन उन्हें चिंता करनी चाहिए जो किसी भी वित्तीय कुरबानी से रोकते हैं। माल देने वाला भी ख़ुदा है और कृतघ्न करने वाले से ले भी सकता है इस बात को हमेशा याद रखना चाहिए इसलिए ऐसे लोगों को जहां जिनके मन में इस प्रकार के विचार आते हैं इस्तिग़फ़ार बहुत अधिक करनी चाहिए।

रशिया में भी कई घटनाएं हैं। एक दोस्त लीनार साहिब कहते हैं उनकी स्थिति काफी ख़राब थी। किराए के फ्लैट में रहते थे। कई वित्तीय कठिनाइयों से घिरे हुए थे लेकिन अपने अनिवार्य चंदे और तहरीक जदीद का चंदा अपनी ताकत के अनुसार अदा करते रहे। यह दोस्त कहते हैं कि चंदे की बरकत से मेरी पत्नी को मेडिकल कॉलेज ख़त्म होने के बाद सरकार की नौकरी मिल गई और सरकार ने बच्चों के आवास के लिए ऋण प्रदान कर दिया। अब वित्तीय हालात पहले से बेहतर हो गए हैं और अल्लाह तआला की कृपा से हमारे पास दो वाहन भी आ गए हैं। यह कहते हैं कि यह सब अल्लाह तआला की कृपा और चंदा अदा करने का नतीजा है। पहले बहुत कठिन परिस्थितियों में भी हम चंदा देते रहे और अब तो अल्लाह तआला ने कई सुविधाएं दी है। अब रशिया में बैठे एक व्यक्ति को भी अल्लाह तआला नवाज़ रहा है। अफ्रीका वाले को भी नवाज़ रहा है। इन्डोनेशियाई वाले को भी नवाज़ रहा है। अन्य देशों में भी, यूरोप में तो यह सब अल्लाह तआला का व्यवहार साबित करता है कि अल्लाह तआला ने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम से जो वादा किया था प्यारों की जमाअत प्रदान करने का और उन्हें ईमान में वृद्धि करने का जो अल्लाह तआला की तरफ बढ़ते हैं उन्हें ईमान में बढ़ाता भी है।

वित्तीय कुरबानी और उस पर अल्लाह तआला के फज़्लों की असंख्य घटनाएं हैं जो मेरे पास आई हैं लेकिन मेरे लिए मुश्किल हो गया था कि उनमें से कौन से निकालों। कुछ एक मैंने प्रस्तुत किए। जैसा कि मैंने कहा लगभग हर देश में रहने वालों के साथ अल्लाह तआला का यही व्यवहार है जो अल्लाह तआला पर भरोसा करते हुए उसके लिए कुरबानी करते हैं। अल्लाह तआला उन्हें बेहद सम्मानित करता है। एक बुद्धि रखने वाले इंसान के लिए अहमदियत की सच्चाई का यही सबूत काफी है कि कैसे कुरबानी के फलस्वरूप अल्लाह तआला कुरबानी करने वालों को नवाज़ता है इसलिए कि ये चंदे ख़ुदा तआला के धर्म के प्रकाशन में खर्च होते हैं।

ग़रीब देशों वाले बेशक चंदे देते हैं लेकिन उनके खर्च उनके चन्दों से बहुत बढ़कर हैं इसलिए अमीर देशों से दिए गए जो चंदे होते हैं केंद्र इन देशों पर खर्च करता है जो अपने बजट पूरे नहीं होते। सैकड़ों स्कूल, दर्जनों अस्पताल, सैकड़ों मिशन हाउसज़, सैकड़ों मस्जिदें हर साल निर्माण होती हैं और उनके लिए पैसे की ज़रूरत होती है जो तहरीक जदीद और वक्फ जदीद के चन्दों से पूरी की जाती है। इसी तरह एम.टी ए के ऊपर भी कई लाख डॉलर खर्च होते हैं। यद्यपि प्रशिक्षण विभाग और एम.टी.ए का भी एक विभाग है जिस में लोग चंदे देते हैं लेकिन लागत इससे बहुत अधिक हैं।

एम.टी.ए के बारे में मैं यह भी कहना चाहता हूं कि समीक्षा के अनुसार यहाँ एम.टी.ए सुनने का रिवाज जितना होना चाहिए वह नहीं है या कम से कम मेरे ख़ुत्बे लाइव नहीं सुनते। जमाअत इतना अनगिनत जो खर्च करती है यह जमाअत की तरबियत के लिए है। अगर समय का अंतर भी है जो ख़ुत्बा repeat आता है तो उसे सुनना चाहिए। असंख्य ग़ैर लोग सुनते हैं और मुझे लिखते हैं तो हम ग़ैर जमाअत से हैं लेकिन आप के ख़ुत्बे सुन रहे हैं।

अल्लाह तआला ने एम.टी.ए को ख़िलाफत से जमाअत का संबंध जोड़ने का एक माध्यम बनाया है। अगर घरों में आप लोग इस ओर ध्यान नहीं देंगे तो धीरे धीरे आप की औलादें पीछे हटना शुरू हो जाएंगी। अल्लाह तआला हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम से किए गए वादे ज़रूर पूरे करेगा। इंशा अल्लाह तआला। श्रद्धालो भी आएंगे और आपने देखा कि नए शामिल होने वालों में ईमानदारी कितनी बढ़ी हुई है लेकिन यह न हो कि नए आने वाले तो सब कुछ ले जाएं और पुराने इस बात पर गर्व करते रहें कि हमारे पूर्वज सहाबी थे या हम पुराने अहमदी हैं। अल्लाह तआला का किसी के साथ कोई रिश्ता नहीं है अगर पुराने अपने आप को दूर करेंगे तो पूर्वजों के सहाबी होने से या उनके रिश्तेदार होने से कोई फायदा नहीं होगा। तो इससे पहले कि पछतावा शुरू हो ख़ुद को ख़िलाफत के साथ जोड़ें और उसका सबसे अच्छा माध्यम अल्लाह तआला ने एम.टी.ए दिया हुआ है इसका इस्तेमाल करें। दूसरे भी कई अच्छे प्रोग्राम एम.टी.ए पर आते हैं लेकिन कम से कम ख़ुत्बा तो जरूर सुना करें। यह नहीं कि मुरब्बी साहिब ने हमें सारांश सुना दिया था इसलिए हमें पता है क्या कहा गया। सारांश सुनने में और पूरा सुनने में बड़ा अंतर है।

अब जैसा कि मैंने कहा कि तहरीक जदीद का नया साल शुरू हो रहा है और पुराना साल ख़त्म हो रहा है इस नए साल की घोषणा करता हूं। मेरे विचार में कनाडा से पहली बार घोषणा हो रही है।

यह जमाअत पर अल्लाह तआला की कृपा है कि इतना विस्तार हो चुका है कि 1934 ई में अहरार जमाअत को ख़त्म करने की बातें करते थे। कादियान की ईंट से ईंट बजाने की बातें करते थे, तब हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहो अन्हो ने तहरीक जदीद की घोषणा की। दुनिया में मिशनरी भेजने की योजना बनाई। तब्लीग़ की एक व्यापक योजना बनाई गई और आज अल्लाह तआला की कृपा से दुनिया के हर देश में जमाअत अहमदिया को जाना जाता है और 209 देशों में जमाअत की स्थापना हो चुकी है। आज बतौर जमाअत, जमाअत अहमदिया ही है जिस पर कभी सूर्यास्त नहीं

वाकफीन नौ को अधिक से अधिक जामिया अहमदिया में आना चाहिए

हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफतुल मसीह अलखामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनसरेहिल अज़ीज़ फरमाते हैं:

"जामिया अहमदिया में जाने वालों की संख्या वाकफीन नौ में अधिक होनी चाहिए। हमारे सामने तो सारी दुनिया का मैदान है। एशिया, अफ्रीका, यूरोप, अमेरिका, ऑस्ट्रेलिया, द्वीप, हर जगह हम ने पहुँचना है। हर जगह, हर बर प्रायद्वीप में नहीं, हर देश में नहीं, हर शहर में नहीं, हर कस्बे में, हर गांव में, दुनिया के हर व्यक्ति तक इस्लाम के सुंदर संदेश को पहुंचाना है। इसके लिए कुछ मुबल्लिग़ काम को पूरा नहीं कर सकते। दुनिया में धर्म को फैलाने के लिए धार्मिक ज्ञान की आवश्यकता है और यह ज्ञान सबसे अधिक ऐसे संस्थान से ही मिल सकता है जिसका उद्देश्य ही धार्मिक ज्ञान सिखाना हो और यह संस्था जमाअत अहमदिया में जामिया अहमदिया के नाम से जानी जाती है। इसलिए वाकफीन नौ को अधिक से अधिक संख्या में जामिया अहमदिया में आना चाहिए। "

(ख़ुत्बा जुम्अ: 18 जनवरी 2013, मस्जिद बैतुल्फ़तूह, लंदन)

(इंचार्ज विभाग वक़्फ नौ भारत)

☆ ☆ ☆

EDITOR
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Editor : +91-9915379255
e-mail : badarqadian@gmail.com
www.alislam.org/badr

REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN XXX
The Weekly **BADAR** Qadian
Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA
PUNHIN 01885 Vol. 1 Thursday 15 December 2016 Issue No. 41

MANAGER : NAWAB AHMAD
Tel. : +91- 1872-224757
Mobile : +91-94170-20616
e-mail:managerbadrqnd@gmail.com
ANNUAL SUBSCRIPTION : Rs. 300/-

होता। कहाँ तो अहरारी कादियान से अहमदियत की आवाज़ को ख़त्म करने की बात करते थे और कहां आज दुनिया के इस पश्चिमी कोने से सारी दुनिया में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के संदेश को आप का एक ग़ुलाम और छोटा सेवक पहुंचा रहा है। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम से जो अल्लाह तआला ने वादा किया था वह बड़ी शान से पूरा हो रहा है। इसलिए इस बात पर भी हर अहमदी को याद रखना चाहिए कि ये बातें उन पर ज़िम्मेदारी डालती हैं और इस ज़िम्मेदारी को अदा करना आप सभी का कर्त्तव्य है। अल्लाह तआला उसकी ताकत भी प्रदान फरमाए।

अब मैं तहरीक जदीद के नए साल की भी घोषणा करता हूँ और परंपरा के अनुसार सारणी भी प्रस्तुत करता हूं। अल्लाह तआला की कृपा से यह तहरीक जदीद का जो साल गुज़रा है 31 अक्तूबर को समाप्त हुआ। यह 82 वां साल था और एक नवंबर से 83वां साल शुरू हो चुका है जैसा कि मैंने घोषणा की है।

अल्लाह तआला की कृपा से जो रिपोर्ट आई हैं उनके अनुसार तहरीक जदीद की वित्तीय प्रणाली में सार्वभौमिक जमाअत अहमदिया को इस साल कुल को एक करोड़ 9 लाख 33 हज़ार पाऊंड स्टर्लिंग की कुरबानी की तौफ़ीक मिली है। अल्हम्दो लिल्लाह। यह वसूली पिछले साल से 17 लाख 70 हज़ार पाऊंड अधिक है।

जमाअतों की स्थिति के संदर्भ में पाकिस्तान तो हमेशा होता ही पहले नंबर पर है उसे छोड़कर नंबर एक जर्मन है, नंबर दो ब्रिटेन है, नंबर तीन अमेरिका है, नंबर चार कनाडा है नंबर पांच भारत, छह ऑस्ट्रेलिया, सात मिडिल ईस्ट की एक जमाअत है, आठवां इंडोनेशिया फिर नौवें पर मिडिल ईस्ट की एक जमाअत है दसवां घाना है और गयारहवां स्विट्ज़रलैंड। स्विट्ज़रलैंड की क्योंकि प्रति व्यक्ति चंदा ज्यादा होता है इसलिए नाम लिख लिया नहीं तो दस तक मूल सूची है।

प्रति व्यक्ति अदायगी के मामले में अमेरिका पहले नंबर पर है। फिर स्विट्ज़रलैंड फिर यू.के फिर फिनलैंड फिर सिंगापुर फिर जर्मनी स्वीडन नॉर्वे जापान कनाडा। और इन से पहले वास्तव में तो मध्य पूर्व की जमाअतों का हम नाम नहीं लेते वह पांच जमाअत उनके ऊपर हैं।

अफ्रीकी देशों में पूर्ण वसूली के मामले में मारीशस नंबर एक है। फिर घाना है फिर नाइजीरिया फिर गैम्बिया फिर साऊथ अफ्रीका फिर बुर्किना फासो फिर कैमरून सिएरा लियोन लाइबेरिया तंजानिया और माली।

शामिल होने वालों की संख्या में भी अल्लाह तआला की कृपा से इस साल नब्बे हज़ार की वृद्धि हुई है और चौदह लाख चार हज़ार से अधिक लोग शामिल हुए हैं और इसमें भी अधिक प्रयास जो किया गया है वह बेनिन ने किया है। नाइजेरिया ने की है माली ने है बुर्किना फासो ने घाना ने लाइबेरिया ने सेनेगल ने और कैमरून ने। इस ओर ध्यान देने की ज़रूरत है और अधिक दुनिया को हर जगह।

दफतर अव्वल के जो खाते थे वह अल्लाह तआला की कृपा से सब चल रहे हैं और इस में चंदे आ रहे हैं उनके रिश्तेदारों द्वारा या कुछ जीवित हैं उनके द्वारा।

पाकिस्तान में जो तीन बड़ी जमाअतें हैं उनमें अव्वल लाहौर है। द्वितीय रबवह है। तृतीय कराची है और इसके बाद वसूली के आधार पर दस शहरी जमाअतें जो हैं। उस में नंबर एक इस्लामाबाद, फिर मुल्तान, फिर क्वेटा, पेशावर, गुजरांवाला, हैदराबाद, हाफिज़ाबाद, मियांवाली, कोटली, ख़ानेवाल और बहावलपुर।

अधिक कुरबानी करने वाले पाकिस्तान के दस जिले। बावजूद ग़रीबी के पाकिस्तान के चंदे बहुत उच्च गुणवत्ता के हैं। स्यालकोट नंबर एक फिर फैसलाबाद फिर सरगोधा, गुजरात,उम्र कोट, ओकाड़ा, नारोवाल, मीरपुर ख़ास, टोबा टेक सिंह मंडी बहाउद्दीन और मीरपुर कश्मीर।

जर्मनी की पहली दस जमाअत। रोईडर मार्क Rodermark, नोईस, वाइन गार्डन Weingarten, राइन हैम साऊथ rainham south, फलोरज़ हायम Florsheim, लिम्बर्ग Limburg, कोलोन Cologne, कोबलनज़ Koblenz, नीदा Neida, महदी आबाद।

और इन की पहली दस लोकल इमारतें जो हैं। हैम्बर्ग Hamburg फिर फ्रैंकफर्ट Frankfurt फिर ग्रास गिराओ, मोरफलडिं, वालडवरूफ, वज़बादन फिर डिटसन बाख़ फिर आफन बाख़ फिर मन हायम फिर डामसटड फिर रडशटटड।

कुल अदायगी के मामले में ब्रिटेन की पहली पांच रेजनज़ हैं। लंदन बी, फिर लंदन ए, फिर मिड नीदरलैण्ड, फिर नॉर्थ ईस्ट फिर साऊथ क्षेत्र और अदायगी के मामले में शीर्ष दस जमाअत जो हैं वे मस्जिद फज़ल नंबर एक पर, फिर वोस्टर पार्क फिर ग्लासगो, बर्मिंघम साउथ फिर न्यू मोलडिं फिर ब्रेडफोर्ड फिर इस्लामाबाद फिर जलनघम फिर मोसक वेस्ट फिर विम्बलडन पार्क।

प्रति व्यक्ति अदायगी के मामले में पहले पांच क्षेत्र वहाँ हैं। साउथ वेस्ट फिर इस्लामाबाद फिर स्कॉटलैंड फिर मिड नीदरलैण्ड, पूर्वोत्तर और बड़ी जमाअतें जो हैं। बरोमले एलश्म Leamington Spa, इस्लामाबाद, Scunthorpe, बर्मिंघम दक्षिण, वोस्टर पार्क, जलनघम, एयरबोर्न मिथ एंड साउथ हैम्पटन, मस्जिद फज़ल मोसक वेस्ट।

वसूली के मामले में कनाडा के स्थानीय इमारतें पीस विलेज नंबर एक पर, नम्बर दो वान है, फिर कैलगरी फिर बरामटन फिर वेनकवोर फिर मिसीसागा और कनाडा की जमाअतों में वसूली के मामले में एडमॉन्टन वेस्ट पहले फिर डरहम फिर सिस्काटोन साउथ सिस्काटोन नॉर्थ, मिल्टन ईस्ट, ओटावा पश्चिम, फिर ओटावा ईस्ट फिर रेजाईना। मेरा विचार था कि लॉयड मिनिस्टर की जमाअत भी अच्छी सक्रिय जमाअत है सदर साहिब भी बड़े सक्रिय काम करने वाले लगते थे वहाँ लोगों की वित्तीय स्थिति भी मुझे बताया गया कि अच्छे हैं उनकी कोई स्थिति नहीं आई।

कुल वसूली के मामले में अमेरिका की जमाअत सिलिकॉन वैली, भरावश कोष नंबर दो फिर डेट्रायट फिर सेयटल फिर यॉर्क फिर सेंट्रल वर्जीनिया, लॉस एंजिल्स फिर सिल्वर स्प्रिंग फिर सेंट्रल जर्सी शिकागो फिर साऊथ वेस्ट फिर लॉस एंजिल्स वेस्ट।

भारत की पहली दस जमाअतें कैरोलाई (केरल) कालीकट (केरल) फिर हैदराबाद आंध्र प्रदेश फिर पत्था पीरयम (केरल) फिर कादियान फिर केनानानूर टाउन (केरल) फिर पंगारी (केरल) फिर दिल्ली फिर कोलकाता (बंगाल) फिर सिलवर (तामिलनाडु)।

भारत के पहले दस प्रांत जो हैं पहले नम्बर पर केरल फिर कर्नाटक फिर आंध्र प्रदेश फिर तमिलनाडु फिर जम्मू कश्मीर फिर उड़ीसा फिर पंजाब, बंगाल, दिल्ली और महाराष्ट्र। भारत में पिछले कुछ वर्षों से बड़ी तरक्की है पहले यहाँ बहुत पीछे थे।

ऑस्ट्रेलिया की पहली दस जमाअतें। यहाँ भी अल्लाह तआला की कृपा सेये लोग आगे बढ़ रहे हैं। मेलबर्न बैरोक फिर कैसल हिल फिर ए स्टेज कैनबरा फिर माउज़डन पार्क फिर बरज़बन, लोगान, बीज़थ मेलबर्न लांग वॉरेन एडिलेड साऊथ पलंपटन मेलबर्न ईस्ट और इसी तरह प्रति व्यक्ति अदायगी के मामले में दस जमाअतें तस्मानिया, बिस्बैन नॉर्थ, ए सी टी, कैनबरा सिडनी मेट्रो डार्विन पईरामीटा मलबर्न बैरोक पर्थ माउज़डन पार्क, पार्क कैसल हिल।

अल्लाह तआला इन सब शामिल होने वालों के मालों और नफ़सों में अपार बरकत प्रदान करे और उनकी कुरबानी को स्वीकार करे और आगे भी बढ़ चढ़कर कुरबानी की तौफ़ीक़ दे और ख़िलाफत से हमेशा उनका मज़बूत संबंध स्थापित करता रहे।

☆ ☆ ☆

पृष्ठ 1 का शेष

अर्थात जहन्नम में एक ऐसा समय आएगा कि कोई भी न होगा और और सुबह की ठण्डी हवा इसके किवाड़ो को हिलाएगी और कुछ पुस्तकों में फारसी भाषा में यह हदीस लिखी है। ई मुश्ते ख़ाक रा गर ना ब ख़श्म चह कुनम। इसी में से।

(हकीकतुल वह्यी, रूहानी खज़ायन,भाग 22, पृष्ठ 194 -196)

☆ ☆ ☆

इस्लाम और जमाअत अहमदिय्या के बारे में किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए संपर्क करें

नूरूल इस्लाम नं. (टोल फ्री सेवा) :
1800 3010 2131
(शुक्रवार को छोड़ कर सभी दिन सुबह 9:00 बजे से रात 11:00 बजे तक)
Web. www.alislam.org, www.ahmadiyyamuslimjamaat.in

Printed & Published by: Jameel Ahmed Nasir on behalf of Nigran Board of Badar. Name of Owner: Nigran Board of Badar. And printed at Fazle-Umar Printing Press. Harchowal Road, Qadian, Distt. Gurdaspur-143516, Punjab. And published at office of the Weekly Badar Mohallah - Ahmadiyya, Qadian Distt. Gsp-143516, Punjab. India. Editor:Shaikh Mujahid Ahmad